|  |
| --- |
| 26. Oktober 2025 |
| **30. Sonntag im Jahreskreis C Weltmissionssonntag** |
| Erste Lesung: Sir 35,15b-17.20-22a; Zweite Lesung: 2 Tim 4,6-8.16-18; Evangelium: Lk 18,9-14 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 143 | Mein ganzes Herz |
|  | GL 148, 1-3 | Komm her, freu dich mit uns |
|  | GL 381, 1+4+5 | Dein Lob, Herr, ruft der Himmel aus |
|  | GL 481, 1+4+5 | Sonne der Gerechtigkeit |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 155 | Kyrie |
|  | GL 163, 4 | Herr Jesus |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 167 | Dir, Gott, im Himmel Preis und Ehr |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Psalm 34,2-3.17-19 u. 23 |  |
|  | Kehrvers: |  |
|  | GL 57, 1 | Meine Seele, preise den Herrn |
|  | GL 365 | Meine Hoffnung und meine Freude |
|  | GL 651, 3 | Ich suchte den Herrn |
|  | oder |  |
|  | GL 424, 5 | Sing, bet und geh auf Gottes Wegen |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 3 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Gott hat in Christus die Welt mit sich versöhnt* |
|  | *und uns das Wort der Versöhnung anvertraut.* |
|  |  |
| Credo: | GL 792, 1 | Ich glaube, Herr |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 422, 1-3! | Ich steh vor dir mit leeren Händen |
|  | GL 187, 1+2 | Wir weihn der Erde Gaben |
|  | GL 543, 1+3 | Wohl denen, die da wandeln |
|  | GL 457, 1-3 | Suchen und fragen |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 719 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 798 | Wo Menschen sich vergessen |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 395, 1-3 | Den Herren will ich loben |
|  | GL 423, 1+3! | Wer unterm Schutz |
|  | GL 427 | Herr, deine Güt ist unbegrenzt |
|  |  |  |
| Schluss: | Marienlied |  |